R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

मूल्य-7 रुपये, वर्ष-23, अङ्क-9 सितम्बर 2023 1

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ०प्र०) का
मासिक मुख समाचार पत्र

मङ्गलायतन

तीर्थधाम चिदायतन

|| श्री कुंदकुंद आचार्य देव ||

|| पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी ||

ऐतिहासिक अतिशयकारी पौराणिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर की पुण्य धरा पर

श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान- दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हस्तिनापुर द्वारा तीर्थधाम चिदायतन का

वेदी शिलान्यास चिदोत्सव

बुधवार, 15 से गुरूवार, 16 नवम्बर 2023

सम्पर्क सूत्रः तीर्थधाम चिदायतन, दूसरी नसियां से आगे, हस्तिनापुर, मेरठ - 250404 (उ.प्र.)

मोबाइलः मंगलार्थी निखिल जैन, मेरठ; +91 93199 07799 | ईमेलः info@chidayatan.com | वेबसाइटः www.chidayatan.com

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-23, अङ्क-9 (वी.नि.सं. 2549; वि.सं. 2079) सितम्बर 2023

पर्व दशलक्षण मंगलकार

पर्व दशलक्षण मंगलकार, पर्व दशलक्षण आनंदकार।
अहो खुशी का अवसर आया, बोलो जय-जयकार।टेक ॥

है यह शाश्वत पर्व धार्मिक, शिवस्वरूप शिवकार।
नहीं व्यक्ति, नहीं सम्प्रदाय का, सब ही को सुखकार ॥1 ॥

श्री जिनवर की पूजा करिये, विषय कषाय विडार।
सम्यक् भक्ति करो प्रभुवर की, होओं भव से पार ॥2 ॥

जिनवाणी की चर्चा सुनिए, भाव विशुद्धि धार।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, भेदज्ञान अवधार ॥3 ॥

बैठ एकांत विचार सु करिये, निज स्वरूप अविकार।
निर्विकल्प आतम अनुभव कर, सफल करो अवतार ॥4 ॥

सम्यक् दर्शन ज्ञान सहित, उत्तम चारित्र विचार।
क्रोधादिक दुर्भाव निवारो, धरो क्षमादिक सार ॥5 ॥

सत्य पंथ निर्ग्रन्थ दिगम्बर, संयम तप हितकार।
त्याग आकिंचन ब्रह्मचर्य धर, सर्व द्वंद निरवार ॥6 ॥

धर्म और धर्मी को समझो, तजो पक्ष दुखकार।
धर्मी के आश्रय से जीवन, होय धर्ममय सार ॥7 ॥

साभार : मंगल भक्ति सुमन

संस्थापक सम्पादक
स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़
स्व. श्री पवन जैन, अलीगढ़
सम्पादक
डॉ. जयन्तीलाल जैन, मङ्गलायतन वि०वि०
सह सम्पादक
डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन
पण्डित अभिषेक शास्त्री, मङ्गलायतन
सम्पादक मण्डल
बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़
डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर
श्रीमती बीना जैन, देहरादून
सम्पादकीय सलाहकार
पण्डित विमलदादा झाँझरी, उज्जैन
श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर
श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली
श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई
श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी
श्री विजेन वी. शाह, लन्दन
मार्गदर्शन
डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका
पण्डित अशोक लुहाड़िया, मङ्गलायतन

नवीन संस्करण का प्रकाशन

तीर्थधाम मङ्गलायतन : साहित्य प्रकाशन की शृंखला में **कविवर पण्डित दौलतरामजी कृत छहढाला** ग्रन्थ।

साथ ही दैनिक पूजन-पाठ के संकलन के साथ **मङ्गल अर्चना** का भी पुनः प्रकाशन का कार्य चल रहा है। जिसमें समस्त पूजनों का संग्रह किया गया है। पुस्तकें सीमित होने से आप अतिशीघ्र अपनी प्रतियाँ सुरक्षित कर लेवें।

सम्पर्कसूत्र–
पण्डित सुधीर शास्त्री, 9756633800;
पण्डित अभिषेक शास्त्री,7610009487
Email : info@mangalayatan.com

शुल्क :
एक प्रति : 07.00 ₹
आजीवन (15 वर्ष) : 1000.00 ₹

क्या – कहाँ

चरणानुयोग
देशव्रतोद्योतनम् 5
द्रव्यानुयोग
समयसार नाटक 9
स्वानुभूतिदर्शन : 16
प्रथमानुयोग
हस्तिनापुर का अतिशयकारी 18
दशलक्षण धर्म पर विशेष
धर्म और धर्म का फल 20
करणानुयोग
जानिये आचार्यों के गुण 24
प्रथमानुयोग
कवि परिचय 25
बालवाटिका 27
द्रव्यानुयोग
जिस प्रकार-उसी प्रकार 28
समाचार-दर्शन 29

चरणानुयोग

श्री पद्मनंदी आचार्य कृत श्री पद्मनंदी पंचविंशतिका के
देशव्रतोद्यन नामक अधिकार पर सत्पुरुषश्री कानजीस्वामी का प्रवचन

देशव्रतोद्योतनम्

(प्र० भाद्रपद सुदी 4, रविवार, ता० 21-8-55)

मेरे स्वभाव में आनन्द है; ऐसी श्रद्धा करके आनन्द मार्ग पर चलनेवाला श्रावक है।

श्रावक किसे कहें ? आत्मा का स्वरूप शुद्ध चैतन्य, वीतरागी है, निर्दोष शांति इस स्वरूप में ही प्राप्त हो सकती है, अन्यत्र नहीं। जो अंतरंग की शांति का आश्रय लेकर राग कम करे, वही श्रावक है। देह, मन, वाणी से आत्मा भिन्न है। शरीर में, स्त्री में, मकान में सुख है क्या ? नहीं, उनमें शांति नहीं है। क्या पर में शांति है ? नहीं। जो आत्मीय शांति का इच्छुक है, उसे निर्णय करना चाहिये कि शांति कहाँ मिलेगी ? पर में आत्मीय सुख नहीं है; सुख तो आत्मस्वभाव में है, आत्मा त्रिकाल-ज्ञान और आनन्दस्वरूप है, उसकी श्रद्धा करनी चाहिये। ऐसे आत्मा की वीतरागता पूर्ण पवित्र श्रद्धा कर राग घटाने से आंशिक अविकारी दशा होती है, उस भूमिका में, आंशिक शुभराग होता है। यह अवस्था श्रावक की होती है। 'पर में सुख है' की भ्रांति का नाश करके आत्मा के आनन्द, वीतरागस्वरूप के निर्णय करने का इच्छुक श्रावक कहलाता है। उस स्वरूप का विश्वास करके पुण्य-पाप तथा संयोगों का भरोसा छोड़ना चाहिये, उनमें सुख नहीं है, वह तो मेरे स्वभाव में है—ऐसे विश्वास सहित वह राग कम करता है। ऐसे मार्ग के बताने वाले देव, गुरु, शास्त्र के प्रति अनुराग, भक्ति प्रकट करता है, वह 'श्रावक' कहलाता है। यदि धन में सुख हो तो धन से गड़ जाने पर ज्यादा सुख होना चाहिये, किंतु संयोग में सुख नहीं है। अज्ञानी जीव, संयोग से ममत्त्व करता है किंतु शरीर, लक्ष्मी, घर आदि सबकुछ, अंत समय में, यहीं रह जाएंगे; 'वे मेरे, मैं

उनका' यह ममता बुद्धि ही साथ रहेगी। किन्तु इसमें सुख शांति नहीं है। मेरा स्वभाव वीतराग निर्दोष है, इसके आश्रय से ही शाश्वत शांति प्रकट होती है। श्रावक, देव-गुरु-शास्त्र के प्रति अनुराग रखता है, इसे ही गृहस्थाश्रम का धर्म कहा है। जो स्त्री, पुत्र, परिवार में सुख मानता है; अपने में सुख न मानकर पर में सुख माननेवाला मूर्ख है। मेरा स्वभाव शुद्ध आनन्दमय है, इसके आश्रय से ही सुख है, ऐसी मान्यतावाला श्रावक कहलाता है। कुल में, सम्प्रदाय में जन्म लेने मात्र से श्रावक नहीं हो जाता।

आनन्द मार्ग के पथिक श्रावक को पूर्ण आनन्दस्वरूपी भगवान की प्रतिमा और मन्दिर बनाने का भाव होता है।

अरागी आत्मा आनन्दकन्द है, वही मेरा स्वभाव है। ऐसे स्वभाव के प्रति विनयी जीव पूर्ण आनन्द को प्राप्त सर्वज्ञदेव के प्रति प्रेम करता है, स्त्री-पुत्र से प्रेम करनेवाला जीव उनकी फोटो देखकर संतुष्ट होता है; उसी प्रकार वर्तमान में वीतरागी सर्वज्ञदेव की अविद्यमानता है, और अपने वीतरागी आत्मा की श्रद्धा है किन्तु अपनी पूर्ण दशा प्राप्त नहीं हुई है; इसलिये श्रावक, सर्वज्ञदेव के जिनमन्दिर के लिये दान अवश्य करता है। पूर्णानन्द प्राप्त देव की वीतरागी मुद्रा को देखकर जिसे उनका ओर अपने स्वरूप का स्मरण होता है, वह इस पंचमकाल में वीतराग भगवान की प्रतिमा और मन्दिर बनाने की इच्छा किए बिना नहीं रहता। जैसे अपने निवास के लिए अच्छा मकान बनाता है वैसे ही, वीतराग देव त्रिकाल-वेत्ता सर्वज्ञ परमात्मा हैं, जिनकी वाणी सर्वज्ञता प्रकट करने में निमित्त है, उनकी प्रतिमा और जिनमन्दिर बनाने का भाव श्रावक को आये बिना नहीं रहता।

श्लोक-23

यात्राभिः स्नपनैर्महोत्सवशतैः पूजाभिरुल्लोचकैः।
नेवेद्यैर्बलिभिर्ध्वजैश्च कलशैस्तौर्यत्रिकैर्जागरैः॥
घण्टा चामरदर्पणादिभिरपि प्रस्तार्य शोभां परां।
भव्यः पुण्यमुपार्जयन्ति सततं सत्यत्र चैत्यालये॥23॥

श्रावक जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा तथा मन्दिरों आदि की प्रभावना में अनेक भक्ति भाव करता है।

इस संसार में चैत्यालय होने से, धर्मी जीव को अपनी शांति का ज्ञान हुआ है, इसलिये वह पूर्ण शांति को प्राप्त सर्वज्ञदेव के वियोग में उनकी प्रतिमा का पूजन आदि करता है। जिन्हें पूर्ण आनन्द प्राप्त हो गया है, भोजनादि की व्याधि नहीं रही है—ऐसे भगवान की प्रतिमा और चैत्यालय बनाकर श्रावक बारम्बार भक्ति करता है। चैत्यालय हों तो लोग भगवान के प्रतिबिम्ब के दर्शन कर पाप दूर करते हैं और पुण्यार्जन करते हैं। यद्यपि यह सत्य है कि भगवान कुछ करते या देते नहीं है। 'हे प्रभु! मेरा भव-भ्रमण समाप्त कर दो।'—भक्त कहता है, किन्तु क्या भगवान ने अब तक रुलाया? नहीं; तूने अपने आप ही भव भ्रमण किया है और अब तू ही इस भ्रमण को समाप्त कर सकता है। भगवान की प्रतिमा तो निमित्त है। पूर्णानंद और मुक्ति प्राप्त सर्वज्ञ के विरह में उनकी प्रतिमा बनाई जाती है, मूर्ति को भगवान के रूप में धर्मात्मा श्रावक स्वीकार करते हैं और भक्ति करते हैं। उनका शुद्ध जल से अभिषेक किया जाता है। अपने बच्चे को नहाते समय माँ प्रसन्न हो जाती है; उसी प्रकार भगवान की प्रतिमा पर जल के अभिषेक को देखकर श्रावक प्रमुदित हो जाता हैं। मूर्ति की उत्थापना करना वास्तविक मार्ग से दूर है। **पुत्र, पुत्री, स्त्री आदि का जन्म दिवस मनाना पापवृत्ति है।** आत्मा का प्रेमी, भगवान सर्वज्ञदेव के विरह में उनका बारम्बार उत्सव करता है, पूजा करता है। स्वयं भरत चक्रवर्ती भगवान की पूजा करते थे। धर्मी के अन्तरंग में अपने पूर्ण स्वरूप की पूर्ण प्रतीति है किन्तु जबतक स्वयं को पूर्णता प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक वह पूजा आदि करता है, वह पाप से बचता है और उसे पुण्य का भाव होता है। जिस ग्राम में मन्दिर नहीं हो तो इच्छा रखते हुए भी, धर्मी कहाँ दर्शन करे? अतः प्रत्येक धर्मी का कर्तव्य है कि वह अपने निवासस्थान में मन्दिर बनाये। पद्मनंदि आचार्य दिगम्बर वीतरागी मुनि थे। मुनि के पास दया का उपकरण मयूर पंख की पीछी और शारीरिक

अपवित्रता दूर करने के लिए कमंडल में जल होता है, यही साधु के लिए सनातन पद्धति है। ऐसे वीतरागी मुनि ने ताड़पत्रों पर छिद्र करके यह ग्रन्थ लिखा है। भगवान के सम्मुख नैवेद्य चढ़ाते समय उनके (भगवान के) अनाहारपने की भावना श्रावक को जागृत होती है और वह भक्तिपूर्वक उनकी पूजा करता है, नवीन मन्दिर पर ध्वजदण्ड चढ़ाता है, उत्सव करता है। देव-गुरु-शास्त्र के प्रति श्रावक को बार-बार प्रमोद होता है। अपने पुत्र-पुत्री के विवाहादि में जैसे गृहस्थ को प्रसन्नता व उत्साह होता है, उसी प्रकार धर्मी को वीतराग प्रतिमा की शोभा के लिए भाव आये बिना नहीं रहते।

धर्मी जीव, मन्दिर के शिखर पर कलश चढ़ाते हैं, बाजा बजवाते हैं, मन्दिर में घंटा, चंवर, दर्पण आदि लगाते हैं; इसप्रकार इन सब सुन्दर वस्तुओं से मन्दिर की उत्कृष्ट शोभा करते हैं और महान पुण्य का संचय करते हैं। इसलिये जहाँ चैत्यालय का अभाव हो, वहाँ भव्य जीवों को चैत्यालय अवश्य बनाना चाहिये। इसप्रकार दान का प्रकरण पूरा हुआ।

श्लोक-23

ते चाणुव्रतधारिणोऽपि नियतंयान्त्येव देवालयं।
तिष्ठन्त्येव महर्द्धिकामरपदं तत्रैव लब्ध्वा चिरम्॥
अत्रागत्य पुनः कुलेऽति महति प्राप्य प्रकृष्टं शुभान्।
मानुष्यं च विरागतां च सकलत्यागं च मुक्तास्ततः॥23॥

श्रावक अणुव्रत का पालन कर देवगति पायेगा, वहाँ से चयकर मनुष्य होकर मोक्ष प्राप्त करेगा।

धर्मी जीव गृहस्थदशा में जिनेन्द्रदेव की पूजा, गुरु की वंदना संयम, तप, ध्यान और स्वाध्याय—ये 6 आवश्यक अवश्य करता है, पाँच अणुव्रत ग्रहण करता है—अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का आंशिक पालन करता है। ऐसा श्रावक स्वर्ग में जायेगा। आत्मा के आनन्दकन्दस्वरूप की श्रद्धा रखनेवाले छः आवश्यक और पाँच अणुव्रत का पालन करने से स्वर्ग में जाते हैं।

क्रमशः

द्रव्यानुयोग

श्री समयसार नाटक पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के धारावाही प्रवचन

कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार प्रवचन

इस प्रकार यह छठवें कलश (7वें पद) का अर्थ हुआ। अब सातवाँ कलश (8वाँ पद)-

एकः परिणमति सदा परिणामो जायते सदैकस्य।
एकस्य परिणतिः स्यादनेकमण्येकमेव यतः॥

इस कलश में कर्त्ता, कर्म और क्रिया का एकत्व बताते हैं-

कर्त्ता, कर्म और क्रिया का एकत्व

करता करम क्रिया करै, क्रिया करम करतार।
नाम-भेद बहु विधि भयौ, वस्तु एक निरधार॥8॥

अर्थः- कर्त्ता, कर्म और क्रिया का करने वाला है, कर्म भी क्रिया और कर्त्तारूप है, सो नाम के भेद से एक ही वस्तु कई रूप होती है॥8॥

पुनः-

काव्य - 8 पर प्रवचन

कर्म और क्रिया का करनेवाला कर्त्ता है और कर्म भी कर्त्ता और क्रियारूप है। इसकारण नामभेद से एक ही वस्तु कितने ही रूप होती है। एक द्रव्य के कार्य का कर्त्ता अन्य नहीं है। घड़े का कर्त्ता कुम्हार नहीं है। घड़ा होने के काल में मिट्टी ही स्वयं घटरूप परिणमति है, तब कुम्हार तो मात्र निमित्त है। दाल, भात, सब्जी, रोटी उन परमाणुओं से स्वयं होती है, उनका कर्त्ता बाई अथवा अग्नि आदि नहीं है। एक-एक रजकण स्वयं बफकर तैयार होता है, उसमें पानी या अग्नि कारण नहीं है।

प्रवचनसार के ज्ञान अधिकार की 'स्वयंभू' की गाथा (16 वीं गाथा) में बहुत स्पष्ट किया है कि जो-जो परिणाम होते हैं, उन-उनरुप वस्तु स्वयं परिणमति है। इसलिए आत्मा के प्रत्येक परिणाम का कर्त्ता आत्मा होने से आत्मा ही कर्म और क्रिया है।

एक करम करतव्यता, करै न करता दोई।
दुधा दरव सत्ता सधी, एक भाव क्यौं होइ॥9॥

अर्थः- एक कर्म की एक ही क्रिया व एक ही कर्त्ता होता है दो नहीं होते, सो जीव पुद्गल की जब जुदी-जुदी सत्ता है तब एक स्वभाव कैसे हो सकता है?

भावार्थः- अचेतन कर्म का कर्त्ता वा क्रिया अचेतन ही होना चाहिये। चैतन्य आत्मा जड़ कर्म का कर्त्ता नहीं हो सकता ॥9॥

काव्य - 9 पर प्रवचन

जड़ और चेतन भिन्न-भिन्न द्रव्य है तो उनके वर्तमान कार्य का कर्त्ता वह-वह द्रव्य ही है। जीव का कार्य जड़ नहीं करता और जड़ का कार्य जीव नहीं करता। किसी भी एक कर्त्तव्य के कर्त्ता दो द्रव्य नहीं हो सकते। जैसे कि आत्मा में वर्तमान में राग-द्वेष का कार्य होता है, उसका कर्त्ता अज्ञानी जीव है, कर्म उसका कर्त्ता नहीं है। जीव भी राग को करे और कर्म भी राग को करे -ऐसा नहीं होता है। दो द्रव्य साथ मिलकर एक द्रव्य के कार्य को करे-ऐसा हो ही नहीं सकता।

आत्मा में ज्ञान की हीनता हो रही है, उस कार्य को जीव करता है, कर्म नहीं करता है। जीव भी ज्ञान की हीनता को करता है और कर्म भी कराता है- ऐसा नहीं होता। समयसार आदि में दृष्टान्त दिया है कि 'जैसे हल्दी और फिटकरी मिलने से लाल रंग होता है, माता और पिता दोनों के द्वारा (संयोग से) बालक होता है, एक द्रव्य से कार्य (विकार) नहीं होता, एक कार्य के कर्त्ता दो द्रव्य हैं।'- यह कथन निमित्त बतलाने के लिए है; अन्यथा कार्य तो एक द्रव्य से ही होता है। विकार को जीव भी करे और कर्म भी करावे- ऐसा नहीं होता। अज्ञानी जीव स्वयं अकेला ही विकार को करता है, कर्म उसको विकार नहीं करता।

जीव दूसरों की दया पालता है -ऐसा कहा जाता है, उसमें जीव तो मात्र दया के भाव करता है। सामनेवाले जीव की दया तो उसके अपने से पलती है

अर्थात् उसकी आयु अवशेष होवे तो वह बचता है। आयु अवशेष न हो तो अन्य जीव के दया के भाव होने पर भी वह नहीं बचता है। इसप्रकार जीव एक अपने ही कार्य का कर्त्ता है।

श्रोता:- इसमें भागीदारी में काम नहीं होता ?

पूज्य गुरुदेवश्री:- नहीं, भागीदारी से काम होता ही नहीं। जीव तो अज्ञान दशा में मात्र राग करता है; परन्तु वह अन्य के कार्य नहीं कर सकता। एक कार्य के कर्त्ता दो द्रव्य हो ही नहीं सकते हैं। अन्य को रुपये देते हो, उसमें रुपये एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का कार्य रुपयों के परमाणुओं से होता है, तुम उसके कर्त्ता नहीं हो। तुम तो मात्र रुपये देने के भाव के कर्त्ता हो।

इसलिए यहाँ कहा है कि जड़ और चेतन की सत्ता भिन्न है। जब दोनों द्रव्य भिन्न है तो उनका स्वभाव एक कैसे हो सकता है ? दोनों की सत्ता भिन्न है तो एक द्रव्य दूसरे द्रव्य की क्रिया को कैसे कर सकता है ?

ये सब श्लोक कर्त्ता-कर्म अधिकार की 86वीं गाथा के हैं।

सामनेवाला (अन्य) जीव दु:खी है, इसलिए दया के भाव हुए- इसकारण यह जीव और वह जीव दोनों उस दया के कर्त्ता हैं- ऐसा नहीं है। यह रूपये अन्य के पास जाते हैं, वह परमाणुओं का कार्य है और हाथ का भी कार्य है- ऐसा नहीं है। हाथ तो मात्र निमित्त है, वे परमाणु स्वयं वहाँ जाते हैं।

परमाणु में अथवा आत्मा में जिस समय जो दशा होती है, वह उसका कार्य अथवा कर्म कहलाता है। दोनों भागीदारी में एक कार्य नहीं कर सकते। परमाणु और आत्मा में प्रत्येक समय अवस्था पलटती है, वह उनकी अपनी-अपनी क्रिया है। एक समय में जो क्रिया थी, वह पलटकर दूसरे समय में दूसरी क्रिया होती है, उसका कर्त्ता उसका द्रव्य है। मूल पाठ में देखो न..! 'नोभौ परिणमत: खलु परिणामो नोभयो प्रजायेत।' अर्थात् यह सिद्धान्त है कि एक ही क्रिया और कर्म के कर्त्ता दो द्रव्य नहीं हो सकते। इसके लिए दृष्टान्त दें तो समझ में आ सकता है। भगवान की प्रतिमा की स्थापना का कार्य होता है वह परमाणुओं ने भी किया और भक्तों ने भी

किया- ऐसा नहीं है। जो द्रव्य परिणमता है, वही उस क्रिया का कर्त्ता है; इसलिए परमाणु उसका कर्त्ता है। परमाणु और आत्मा दो भिन्न द्रव्य हैं। आत्मा परमाणु के कार्य को नहीं करता। आत्मा में विकल्प होता है, इसलिये परमाणुओं का कार्य होता है- ऐसा भी नहीं है।

जिसका होनापना-सत्ता ही भिन्न है, उसकी क्रिया का कर्त्ता अन्य द्रव्य हो ही नहीं सकता। आत्मा राग भी करे और व्यापार भी करे- ऐसा नहीं हो सकता। व्यापार तो नहीं करे, परन्तु दो घंटे दुकान में जाकर बैठे और ध्यान रखे तो अन्तर तो पड़ता है या नहीं है? अन्तर पड़ता दिखता भी है, परन्तु उसका कर्त्ता जीव नहीं है। सेठ का भाव सेठ के पास रहता है और जड़ का भाव जड़ के पास रहता है। एक-दूसरे के भाव को परस्पर में करें- ऐसा तीन काल-तीन लोक में भी नहीं हो सकता।

दया से मेघकुमार के संसार का अभाव हुआ -ऐसी बात अन्य में (श्वेताम्बर में) आती है, वह मात्र कल्पित है। राग से संसार का अभाव कैसे हो सकता है? राग से संसार का अभाव होता है- यह जैन सिद्धांत ही नहीं है। पर की दया से भव घटते भी नहीं हैं। सम्मेद शिखर की एकबार वंदना करनेवाले को नरक-पशुगति नहीं होती है- यह बात भी परमार्थ नहीं है। क्या सम्मेदशिखर जीव के भाव को कर सकता है? भगवान की प्रतिमा से जीव शुभभाव को करता है- ऐसा नहीं है। जीव स्वयं शुभभाव को करता है, जीव के परिणाम को प्रतिमा नहीं करती है। दो द्रव्यों की क्रिया को एक द्रव्य कर ही नहीं सकता। प्रतिमा अपनी अवस्था को करती है, अन्य जीव की अवस्था को नहीं करती।

अचेतन कर्म अथवा क्रिया का कर्त्ता अचेतन ही होता है और चेतन की क्रिया अथवा कर्म का कर्त्ता चेतन ही होता है। जिसको यह बात मान्य नहीं है, वह मिथ्यादृष्टि है। दिगम्बर जैन सम्प्रदाय में रहकर भी कोई एक कार्य का कर्त्ता दो द्रव्यों को मानता है तो वह मूढ़ मिथ्यादृष्टि है। कोई तो ऐसा कहते हैं कि 'जो यह मानते हैं कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का नहीं करता, वह दिगम्बर

जैन नहीं है।' जब कि यहाँ (शास्त्र में) तो कहते हैं कि 'जो यह मानता है कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कार्य करता है, वह दिगम्बर जैन नहीं है।'

अब दसवें पद्य में कर्त्ता-कर्म-क्रिया पर विचार करते हैं।।9।।

कर्त्ता, कर्म और क्रियापर विचार

एक परिनामके न करता दरव दोइ,
दोइ परिनाम एक दर्व न धरतु है।
एक करतूति दोइ दर्व कबहूं न करै,
दोइ करतूति एक दर्व न करतु है॥
जीव पुद्गल एक खेत-अवगाही दोउ,
अपनें अपनें रूप कोउ न टरतु है।
जड़ परनामनिकौ करता है पुदगल,
चिदानंद चेतन सुभाउ आचरतु है॥10॥

अर्थः- एक परिणाम के कर्ता दो द्रव्य नहीं होते, दो परिणामों को एक द्रव्य नहीं करता, एक क्रिया को दो द्रव्य कभी नहीं करते, दो क्रियाओं को भी एक द्रव्य नहीं करता। जीव और पुद्गल यद्यपि एक क्षेत्रावगाह स्थित हैं तो भी अपने स्वभाव को नहीं छोड़ते। पुद्गल जड़ है इसलिये अचेतन परिणामों का कर्त्ता है और चिदानंद आत्मा चैतन्यभाव का कर्त्ता है॥10॥

काव्य - 10 पर प्रवचन

देखो, क्या कहते हैं? एक परिणाम के कर्त्ता दो द्रव्य नहीं होते। ज्ञानावरणादिक कर्म बँधते हैं उनके बँधने की क्रिया का कर्त्ता कर्म है। छह प्रकार के कारणों से ज्ञानावरणी कर्म को बाँधता है- ऐसा कहा है, इसलिए वे छह प्रकार के भाव कर्म को बांधने की क्रिया करते हैं- ऐसा नहीं है। आत्मा ज्ञानावरणी कर्म को बाँधता है- यह बात तो अत्यन्त झूठ है। जब कर्म बँधते हैं तब जीव के भाव निमित्तरूप होते हैं, इसलिये जीव ने कर्म बांधा- ऐसा व्यवहार से कहा जाता है। तत्त्वार्थसूत्र में यह सब आता है कि छह कारण से ज्ञानावरणी बँधता है, अन्य छह कारण से दर्शनावरणी बँधता है। इसप्रकार

प्रत्येक कर्म बँधने में जीव के जो-जो भाव निमित्त हैं, वह वहाँ बताया है। आत्मा ज्ञान की आशातना के परिणाम करता है, परन्तु कर्म बाँधने का कार्य आत्मा का नहीं है। कर्म के परिणाम को कर्म ही करता है, जीव कर्म के परिणाम को नहीं करता है।

निमित्त आवे तो उपादान में कार्य होता है- यह बात अत्यन्त झूठ है। उपादान स्वयं ही अपनी उस-उस समय की क्रिया का कर्त्ता है। उपादान और निमित्त दोनों मिलकर एक कार्य को करते हैं- ऐसा नहीं है, दोनों अपने-अपने कार्य को करते हैं। 'वोरा ब्रदर्स'-'कोठारी ब्रदर्स' -ऐसे एक नाम से बहुत भाई मिलकर कार्य करते हैं- ऐसा नहीं है। दीपक हवा से बुझता है -ऐसा नहीं है। दीपक और पवन दो मिलकर बुझने के कार्य को करते हैं- ऐसा नहीं हो सकता। दीपक स्वयं बुझता है। पवन तो पवन का कार्य करता है। यह सब 'एक परिणाम के कर्त्ता दो द्रव्य नहीं होते' -इस सिद्धांत की बात हुई।

अब कहते हैं कि 'दो द्रव्यों के परिणाम को एक द्रव्य नहीं करता, निमित्त का कार्य निमित्त करता है और उपादान, उपादान का कार्य करता है। अग्नि पानी को गर्म नहीं कर सकती। अग्नि तो अग्निरूप परिणमने का कार्य करती है और पानी स्वयं अपनी उष्ण पर्याय को करता है। इसका कारण यह है कि अग्नि और पानी दोनों भिन्न-भिन्न द्रव्य हैं। दोनों की सत्ता अलग है, इसलिए एक सत्ता दो कार्यों को नहीं कर सकती। यह बात समझकर अन्दर में बैठाये बिना भव का अन्त नहीं आयेगा; क्योंकि वस्तु की मर्यादा ही ऐसी है, इसलिए पर को समझाने की बात नहीं है, स्वयं समझकर श्रद्धा में बैठाना चाहिए।

पानी स्वयं अपनी शीतअवस्था पलटकर उष्णअवस्था धारण करता है। उस पर्याय को अन्य द्रव्य धारण नहीं करता। दो द्रव्य एक परिणाम को धार ही नहीं सकते और दो परिणाम को एक द्रव्य नहीं धार सकता; परन्तु अभी यह बात कहीं नहीं रही है। अन्य का भला करो, शरीर की क्रिया करो तो तुम्हारा भला होगा- ऐसी ही बातें सब जगह चलती हैं; परन्तु विचार तो करो

कि तत्त्व अनन्त हैं, तो दो तत्व मिलकर एक क्रिया करेंगे तो अनन्त तत्त्व भिन्न किस प्रकार रहेंगे ?दो पर्यायों को एक द्रव्य करता है –ऐसा हो ही नहीं सकता। अग्नि अपनी पर्याय को करे और पानी की गर्म पर्याय को भी करे– ऐसा हो ही नहीं सकता। अग्नि अपनी पर्याय को करती है और पानी, पानी की गर्म पर्याय को करता है।

जिसकी सत्ता भिन्न है, उसके परिणाम को अन्य सत्ता करे –ऐसा तीन काल में कभी बन ही नहीं सकता। जगत का कर्त्ता ईश्वर तो है ही नहीं, परन्तु एक तत्त्व भी दूसरे तत्त्व की पर्याय को नहीं कर सकता– ऐसी वस्तु की मर्यादा है, तथापि जो अपने को अन्य द्रव्यों का कर्त्ता मानता है, वह सम्पूर्ण जगत का कर्त्ता होने जाता है। जैसे जो अनीति से एक पैसा भी लेने को तैयार होता है, वह अनुकूल योग होगा तो इसप्रकार सम्पूर्ण जगत की सम्पत्ति लेने को तैयार हो जायेगा। उसके भीतर सम्पूर्ण दुनिया का राज लेने की ममता पड़ी है। उसी प्रकार यहाँ कहते हैं कि जो एक द्रव्य का कर्त्ता अन्य द्रव्य को मानता है, वह अज्ञानी सम्पूर्ण दुनिया की पर्याय का कर्त्ता अपने को मानता है। जब प्रत्येक द्रव्य की सत्ता ही भिन्न–भिन्न है तो एक के कार्य को दूसरे की सत्ता कैसे कर सकती है ?दूसरे की सत्ता का अभाव हो तो इस सत्ता में मिलकर उसका कार्य करे; परन्तु सत्ता का अभाव तो कभी होता ही नहीं।

जैनप्रकाश में हजरत अली की बात आई थी कि वह ऐसा न्याय–नीतिवाला था कि राज्य के कार्य के लिए राज्य की चिमनी जलाता था; परन्तु यदि कोई घर का काम करे तो राज्य की चिमनी (मोमबत्ती) बंद करके घर की चिमनी जलाता था। इतना अधिक प्रमाणिक; इसलिए लोगो में प्रसिद्ध हो गया। जहाँ लौकिक में ऐसी न्याय–नीति होती है तो इस अलौकिक मार्ग में आनेवाले को ऐसी न्याय–नीति तो पहले ही होती है तो ही यह धर्म समझ में आता है। जिसको लौकिक न्याय–नीति का ठिकाना न हो, उसको यह धर्म तीन काल में समझ में नहीं आ सकता; क्योंकि यह तो लोकोत्तर नीति है। इसमें आनेवाले को लौकिक नीति तो होनी ही चाहिए। **क्रमशः**

स्वानुभूतिदर्शन : बहिनश्री की तत्त्वचर्चा

प्रश्न :— बाह्य कार्य चाहे जैसा कठिन हो तथापि जीव उसे करने की तत्परता बताता है; परन्तु यहाँ पूज्य गुरुदेव और आप बहुत कुछ बतलाते हैं फिर भी करता नहीं है ?

समाधान :— गुरु कहते हैं कि इस मार्ग पर चल.... यह दिशा है वहाँ जा; वे मार्ग बतलाते हैं, किन्तु चला नहीं देते। गुरुदेव ने खोल-खोलकर सब बतलाया है। जैसे छोटे बच्चे को बताते हैं, वैसे बतलाया है।

विभाव—शुभभाव बीच में आवें उनमें रुकना नहीं, भीतर साधकदशा की पर्यायें प्रगट हों उनमें भी नहीं रुकना और अनेक प्रकार के ज्ञान के भेद आवें उनमें भी मत रुकना। इस प्रकार गुरुदेव अनेक प्रकार से समझाते थे। एक शाश्वत द्रव्य को ग्रहण करके उस मार्ग पर चलने से तुझे शुद्धता की पर्याय प्रगट होगी—ऐसा कहकर मार्ग बतलाते थे। अकेले ज्ञायक द्रव्य को पकड़ना, तो तुझे ज्ञायक भगवान में जो भरा है, वह सब प्राप्त होगा। उसमें सर्व निधियाँ भरी हैं, वे मिलेंगी। इस प्रकार खोल-खोलकर बतलाते थे, परन्तु चलना तो अपने को है। गुरुदेव ने सब बतला दिया, किन्तु चले कौन ? गुरु मार्ग बतलाते हैं, मुँह में कौर रखते हैं, परन्तु अपनी जीभ चलाकर अपने को गले उतारना रहता है अर्थात् पुरुषार्थ तो स्वयं को करना रहता है।

ऐसा बतलाने वाला इस पंचम काल में कौन मिले ? दुनिया में सब जीव कहीं न कहीं अटके होते हैं। कोई थोड़ा पढ़ते हैं और भक्ति-त्याग-क्रिया करते हैं इसलिए धर्म हो गया, तथा कोई ध्यान करते हैं, उसमें प्रकाश दिखायी दे या भगवान दिखायी दे तो धर्म हो गया ऐसा मानते हैं। इस प्रकार कहीं न कहीं भ्रमणा में भूले पड़े हैं।

गुरुदेव ने पूरा समझाया है इसलिए किसी मुमुक्षु को भ्रमणा होने का अवकाश नहीं है, मात्र चलना ही बाकी है। इतना पूरा गुरुदेव ने बतलाया है। सबके ऊपर से दृष्टि उठाकर एक चैतन्यपर दृष्टि दे, भेदज्ञान प्रगट कर।

स्वानुभूति प्रगट करके उसी में तृप्त हो तो उसमें से ही आनन्द का सागर उछलेगा; उसमें शान्ति का सागर, ज्ञान का सागर भरा है, इसलिए उसी में से शान्ति-ज्ञान प्रगट होंगे। उसी में बारम्बार दृष्टि, ज्ञान और लीनता करने से उसी में से पूर्णता की प्राप्ति होगी।

प्रश्न :— नास्तिभाव से निर्णय बराबर होता है, किन्तु अस्तिभाव से पकड़ में नहीं आता कि मैं ज्ञायक आत्मा ही हूँ ?

समाधान :— पहले आत्मा दिखायी नहीं देता, इसलिए अस्ति ग्रहण नहीं होती और रागादि सब करनेयोग्य नहीं है ऐसा लगता है, क्योंकि रागादि दु:खरूप लगते हैं, तथापि आत्मा स्वलक्षण से पहिचानने में आता है। जाननेवाला है वही मैं हूँ ऐसा विचार करके और गहराई में उतरकर सूक्ष्म उपयोग करे तो अपनी अस्ति ग्रहण होती है। स्वयं अपने को भूल गया है, किन्तु स्वयं ही है, कोई अन्य नहीं।

सर्वभाव चले गये, परन्तु स्वयं ज्ञाता तो ज्यों का त्यों शाश्वत रहता है। भूतकाल में जो विकल्प हुए उन्हें स्वयं याद कर सकता है, परन्तु स्वयं तो ज्यों का त्यों ही रहता है। इसलिए ज्ञाता का जैसा है वैसा अस्तित्व ग्रहण करना चाहे तो कर सकता है। स्वयं अन्तर में गहरे उतरकर जो यह जाननेवाला ज्ञायक है, वही मैं हूँ ऐसा जोर उस पर ला सकता है। इस प्रकार ज्ञायक पर जोर लाकर निर्णय करे तो यथार्थ प्रतीति कर सकता है। स्वयं विचार कर तथा अन्तर में निर्णय करके जोर लाये कि यह जो ज्ञाता है सो मैं हूँ, यह रागादि मैं नहीं हूँ, तो स्वयं अपने को पहिचान सकता है।

प्रश्न :— आत्मा को पहिचानने का अभ्यास किस प्रकार करें ? क्या बाह्य कार्यों को छोड़ देवें ?

समाधान :— स्वयं अन्तर से खटक रखकर पढ़ने का समय निकाल लेना। ऐसे कार्य नहीं होने चाहिए कि अपने को विचार-वांचन में बाधा पहुँचे। इतने अधिक कार्य न हों कि पढ़ने या विचारने का समय ही न मिले।

शेष पृष्ठ 23 पर....

प्रथमानुयोग

तीर्थधाम चिदायतन

हस्तिनापुर का अतिशयकार इतिहस

धार्मिक नगरी हस्तिनापुर का वर्णन उत्तरपुराण से

संसार में जितनी श्रेष्ठ वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं, उन सबका अपनी उत्पत्ति के स्थान में उपभोग करना अनुचित है, इसलिए सब जगह की श्रेष्ठ वस्तुएँ उसी नगर में आती थीं और वहाँ के रहनेवाले ही उनका उपभोग करते थे। यदि कोई पदार्थ वहाँ से बाहर जाते थे तो दान से ही बाहर जा सकते थे, इस तरह यह नगर पूर्वोक्त त्यागी तथा भोगीजनों से व्याप्त था। इस नगर के सब लोग तादात्विक थे—सिर्फ वर्तमान की ओर दृष्टि रखकर जो भी कमाते थे, उसे खर्च कर देते थे। उनकी यह प्रवृत्ति दोषाधायक नहीं थी क्योंकि उनके पुण्य से सभी वस्तुएँ प्रतिदिन बढ़ती रहती थीं।

इस नगर में ब्रह्मस्थान के उत्तरी भूभाग में राजमन्दिर था, जो दैदीप्यमान भद्रशाल—उत्तमकोट आदि से विभूषित था और भद्रशाल आदि वनों से सुशोभित महामेरु के समान जान पड़ता था। उस राजमन्दिर के चारों ओर यथायोग्य स्थानों पर जो अन्य दैदीप्यमान सुन्दर महल बने हुए थे, वे मेरु के चारों ओर स्थित नक्षत्रों के समान सुशोभित हो रहे थे। उस हस्तिनापुर राजधानी में काश्यपगोत्री दैदीप्यमान राजा अजितसेन राज्य करते थे। उनके चित्त तथा नेत्रों को आनन्द देनेवाली प्रियदर्शना नाम की रानी थी। जिन्होंने बालचन्द्रमा आदि शुभ स्वप्न देखकर ब्रह्मस्वर्ग से च्युत हुए विश्वसेन नामक पुत्र को उत्पन्न किया था।

गन्धार देश के गान्धार नगर के राजा अजितंजय के, उनकी अजिता रानी से सनत्कुमार स्वर्ग से आकर ऐरा नाम की पुत्री हुई थी और ऐरा राजा विश्वसेन की प्रिय रानी हुई थी। श्री ह्रीं धृति आदि देवियाँ उसकी सेवा करती थीं। भादों बदी सप्तमी के दिन भरणी नक्षत्र में रात्रि के चतुर्थ भाग में उन्होंने साक्षात् पुत्ररूप फल को देनेवाले सोलह स्वप्न देखे। अल्पनिद्रा के बीच जिसे कुछ-कुछ ज्ञान प्राप्त हो रहा है तथा जिसके मुख से शुद्ध सुगन्धि

प्रकट हो रही है, ऐसी रानी ऐरा ने सोलह स्वप्न देखने के बाद अपने मुख में प्रवेश करता हुआ एक हाथी देखा।

उसी समय मेघरथ का जीव स्वर्ग से च्युत होकर रानी ऐरा के गर्भ में आकर उस तरह अवतीर्ण हो गया जिस तरह कि सूक्ति में मोती रूप परिणमन करेनवाली पानी की बूँद अवतीर्ण होती है। उसी समय सोती हुई सुन्दरी को जगाने के लिए ही मानों उसके शुभ स्वप्नों को सूचित करनेवाली अन्तिम पहर की भेरी मधुर शब्द करने लगी। उस भेरी को सुनकर रानी ऐरा का मुख-कमल, कमलिनी के समान खिल उठा। उसने शय्यागृह से उठकर मंगल-स्नान किया, उस समय के योग्य वस्त्राभूषण पहने और चलती-फिरती कल्पलता के समान राजसभा को प्रस्थान किया।

उस समय वह अपने ऊपर लगाये हुए सफेद छत्र से बालसूर्य की किरणों के समूह को भयभीत कर रही थी, ढुरते हुए चमरों से अपना बड़ा भारी अभ्युदय प्रकट कर रही थी, और पास में रहनेवाले कुछ लोगों से सहित थी। जिस प्रकार रात्रि में चन्द्रमा की रेखा प्रवेश करती है, उसी प्रकार उसने राजसभा में प्रवेश किया। औपचारिक विनय करनेवाली उस रानी को राजा ने अपना आधा आसन दिया। उसने अपने द्वारा देखी हुई स्वप्नावली क्रम-क्रम से राजा को सुनाई और अवधिज्ञानरूपी नेत्र को धारण करनेवाले राजा से उनका फल मालूम किया।

उसी समय चतुर्णिकाय के देवों के साथ स्वर्ग से इन्द्र आये और आकर गर्भावतारकल्याणक मनाने लगे। उधर रानी के गर्भ में इन्द्र बड़े अभ्युदय के साथ बढ़ने लगा और इधर त्रिलोकीनाथ की माता रानी पन्द्रह माह तक देवों के द्वारा की हुई रत्नवृष्टि आदि पूजा प्राप्त करती रही। जब नवाँ माह आया तब उसने ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी के दिन याम्ययोग में प्रातःकाल के समय पुत्र उत्पन्न किया। वह पुत्र ऐसा सुन्दर था मानो समस्त संसार के आनन्द का समूह ही हो। साथ ही अत्यन्त निर्मल मति-श्रुत-अवधिज्ञानरूपी तीन उज्ज्वल नेत्रों का धारक भी था। **(श्लोक, 377 से 398 तक) क्रमशः**

दशलक्षण धर्म पर विशेष

धर्म और धर्म का फल

यह दशलक्षण पर्व है। यह भूले भटके प्राणियों को मार्गनिर्देशक, संकेतपट की तरह धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। विषय कषायों के वातावरण में रहनेवाला गृहस्थ अपने सन्मार्ग को भूल जाता है तो ये पर्व हमें इष्ट पथ पर चलने के लिए सावधान कर देते हैं। फिर इस दशलक्षण पर्व का सीधा सम्बन्ध तो आत्मधर्म से है। ये दशधर्म अपने प्रति पक्षी विकारी भावों का नाशकर जीवन को सुखशान्ति का रसास्वादन कराते हुए प्रगट होते हैं। इन दश धर्मों को सीखने के लिए ही ये दस दिन नियत किये गये हैं।

ये उत्तम क्षमादि धर्म के अंगप्रत्यंग हैं। धर्म तो रत्नत्रय है, इस रत्नत्रय में आत्मसात होते ही ये उसकी दस शाखायें भी नियम से प्रगट होती हैं। सच पूछा जाय तो ये धर्म के फल हैं। जो धर्मवृक्ष में फलते हैं। ये धर्म के फल पूर्ण रूप से मुनिराज के और एक देश सम्यग्दृष्टि गृहस्थ श्रावक को भी प्राप्त होते हैं। इनके साथ उत्तम विशेषण सम्यग्दर्शन को ही इंगित करता है। इन धर्मों से ही धर्मात्मा की पहिचान होती है कि उसके भीतर और बाहर आचार-विचार किस ढंग के होते हैं, इनको धारण नहीं करना पड़ता, ये स्वत: स्वभाव ही प्रगट होते हैं।

इनके स्वत: उत्पन्न होने का कारण यह है कि मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी कषाय के नष्ट हो जाने से पदार्थों से अपनापन और इष्ट-अनिष्ट बुद्धि नष्ट हो जाती है। और जब कोई परपदार्थ इष्ट नहीं तो राग किससे करेगा? और जब कोई पदार्थ अनिष्ट नहीं तो द्वेष किस पर करेगा? अत: उत्तम क्षमादि धर्म स्वयं पलने लगते हैं।

मिथ्यादृष्टि जीव परलोक एवं नरकादि के भय से क्षमा तो कर सकता है किन्तु उत्तम क्षमा का पालन नहीं कर सकता। क्योंकि अनंतानुबन्धी कषायादि के होने से पदार्थों में इष्टानिष्ट बुद्धि तो है ही। अत: जिसे अनिष्ट या

हानिकारक मानता है, उससे सहज द्वेष बुद्धि होकर भी भय के कारण द्वेष नहीं करता है। अन्यथा नरकादि का खतरा मानता है। जबकि ज्ञानी जीव को परलोक का भय होता ही नहीं है। वह निरन्तर सुखानुभूति करता हुआ आत्मानन्द में मग्न रहता है। उसे चारों गतियों में कोई गति भी अच्छी-बुरी नहीं है। चारों गतियों में दु:ख ही दु:ख है। ये संसार की ही चार गतियाँ हैं। इनके बाहर मोक्ष को तो पंचम गति भी कहा जाता है क्योंकि वह संसार से भिन्न स्वतन्त्ररूप है। ये चारों गतियाँ पराधीन और दु:खरूप ही हैं।

जब परपदार्थ अनिष्ट और बाधक नहीं तब वह क्रोध क्यों करेगा? अपकार करनेवाला हमारा विकारी भाव ही है। कोई दूसरा नहीं। अत: सहज **उत्तम क्षमा** पलती है और भेदविज्ञान से सम्पूर्ण पदार्थों को भिन्न मान लिया है तो **उत्तम मार्दव** रूप धर्म होगा। दूसरे की वस्तु पर मान क्यों करेगा? मान तो पदार्थों का स्वामित्व होने पर होता है।

जब परपदार्थों पर मेरा स्वामित्व और अधिकार नहीं तो मायाचारी से उन्हें अनुकूल बना सकूँगा, ऐसी मान्यता छूट ही जाती है। और **उत्तम आर्जव** धर्म पलता है। चूँकि कोई भी पदार्थ हमारे आधीन नहीं है। सभी पदार्थ अपने आप में रहकर अपने चतुष्टय में ही परिणमन करते हैं; क्योंकि परिणमन करना उनका स्वभाव धर्म है। विकारी परिणमन भी उनकी ही गलती से अपनी योग्यता से हो रहा है। अमृतचन्द्राचार्य ने कहा भी है—

रागद्वेषोत्पादकं तत्त्वदृष्ट्या।
नान्यद्द्रव्यं वीक्षते किंचनापि॥
सर्वद्रव्योत्पत्ति रत्नश्चकास्ति।
व्यक्तात्यंतं स्वस्वभावेन यस्मात्॥219॥

तत्त्वदृष्टि से देखा जाये तो राग-द्वेष को उत्पन्न करनेवाला अन्य द्रव्य किंचित् मात्र भी दिखाई नहीं देता है। क्योंकि सब द्रव्यों की उत्पत्ति अपने स्वभाव से ही होती हुई अन्तरंग में अत्यन्त प्रकट प्रकाशित होती है।

जब परपदार्थ सुखकारी नहीं तो उनके प्रति लोभ नहीं होता है और कषाय के अभाव में जितनी शुद्धि प्रकट हुई है, उतना **उत्तम शौच** धर्म

सहज पलता है। परपदार्थ के कर्तृत्व का अभाव हो जाने से परिणति अपनी सीमा में रहती है, यही उसका **उत्तम संयम** है। इसके साथ जो कषाय अप्रत्याख्यानादि या संज्वलनादि शेष रह गयी है, उतना बाह्य संयम भी पलता ही है। पंचेन्द्रिय विषयों में सुख की मान्यता एवं जीवों पर करुणाभाव सहज ही रहता है।

स्वरूप विश्रान्ति में ही उसे आनन्द की अनुभूति होने से इच्छाएँ स्वत: रुक जाती हैं, यही **उत्तम तप** है एवं विकार का भी स्वामित्व न होने से उनको हेय समझता है। अत: भूमिकानुसार उसका **त्याग** होते चला जाता है। बाह्य में धनादि में अपनत्व नहीं होने से यथास्थान त्याग होता रहता है।

परपदार्थ में ममत्व न होने से संग्रह वृत्ति भी नहीं होती है, क्योंकि परपदार्थ के परमाणु मात्र को पररूप मानता है। धन वैभव आदि तो उसे काक वीट की तरह अनावश्यक है। पुण्य के उदय में जो संयोग रहता है, उसमें विराग वृत्ति रहती है; अत: **उत्तम अकिंचन** धर्म उसके पलता रहता है तथा स्वभाव की रुचि होने से विषयों से रुचि स्वत: छूटती चली जाती है, यही **उत्तम ब्रह्मचर्य** धर्म है। ये धर्म गृहस्थ की अपेक्षा से कहे हैं।

जिस धर्मात्मा में ये धर्म आत्मसात् हो जाता है, उसके व्यावहारिक जीवन में भी बड़ा परिवर्तन हो जाता है। उसके जीवमात्र में मैत्रीभाव रहता है। क्योंकि जब कोई किसी को हानिलाभ नहीं पहुँचा सकता है तो वैरभाव उत्पन्न होने का कोई कारण भी नहीं रह जाता है। धर्मात्मा और गुणी जीवों को देखकर उसमें स्वत: प्रमोद और उल्लास उत्पन्न होता है और अपने से विरोधी विचारधारावालों पर मध्यस्थ भाव रखता है। उनका न कभी बुरा सोचता है और न उनका अपमान करता है। यदि अपने विरोधी के प्रति द्वेषभाव रखता है तो वह मिथ्यादृष्टि ही हो सकता है। जैन कभी भी नहीं हो सकता है।

जैन मन्दिरों में किसी न किसी स्थान पर सिंह और गाय को एक ही घाट से पानी पिलाते हुए एवं सिंह शावक, गाय का दूध पीते हुए एवं गाय

का बछड़ा, सिंहनी का दूध पीते हुए चित्र दिखाया जाता है। जिसका भाव है कि वीतरागी देव, गुरु और धर्म की शरण में आनेवाले में सहज ही विश्वमैत्री की भावना जागृत रहती है। उसका किसी से बैर विरोध नहीं रह जाता है। यह एक उच्चकोटि का आदर्श एवं त्रिकाल सत्य है कि जो सच्चे देव, शास्त्र, गुरु और धर्म का श्रद्धानी होगा, जो अहिंसा और वीतराग का अनुयायी होगा, वह कभी भी अपने साधर्मी एवं किसी पर अपनी ओर से बैर-विरोध नहीं रखेगा।

यदि जीवन में शान्ति नहीं आयी तो समझो वह धर्मात्मा नहीं है। क्योंकि धर्मात्मा में विवेक और विराग होता ही है एवं क्रोधादि कषाय अज्ञानता से प्रारम्भ होती है और अन्त में पश्चाताप ही हाथ लगता है। दशलक्षण पर्व के पश्चात् इसीलिए **क्षमावाणी पर्व** मनाया जाता है कि दश दिन धर्म साधना और धर्मश्रवण से परिणामों में अपूर्व शान्ति अनुभव होने लगती है, जिसके फलस्वरूप यदि अज्ञानतावश किसी से बैर-विरोध हो गया हो तो उससे क्षमा याचना कर अपने परिणामों की निर्मलता का परिचय देता है। यदि अपने विरोधी विचारधारा वालों के प्रति क्षमाभाव नहीं आया तो उसका पर्व मनाना कैसे सार्थक कहा जा सकता है ?

साभार : सन्मति सन्देश, सितम्बर 1976

...पृष्ठ 17 का शेष

यदि वैसा हो तो स्वयं कार्यों को कम करके निवृत्ति मिले ऐसा करना चाहिए। कुछ एक कार्य छोड़ देने चाहिए, परन्तु कितने छूटते हैं सो तो अपनी शक्ति के अनुसार है। अपने को निवृत्ति मिले, पढ़ने-विचारने का समय मिले—ऐसे प्रकार के मर्यादित कार्य होवें। गृहस्थाश्रम में अमुक प्रकार के कार्य तो होते हैं, परन्तु अपने को निवृत्ति के लिये समय ही न मिले और बोझ बढ़ जाये ऐसा न होवे। कार्य छोड़ने या नहीं छोड़ने, वह तो अपनी रुचि पर निर्भर है, किन्तु गृहस्थाश्रम में इतना तो होना चाहिए कि अपने को पढ़ने-विचारने का समय मिले।

करणानुयोग

जानिये आचार्यों के 36 गुण

2. आचार्यों के 36 गुण : —

दस धर्म — 1. उत्तम क्षमा, 2. मार्दव, 3. आर्जव, 4. सत्य, 5. शौच, 6. संयम, 7. तप, 8. त्याग, 9. आकिंचन्य, 10. ब्रह्मचर्य।

बारह तप — 1. अनशन, 2. अवमौदर्य, 3. वृत्तिपरिसंख्यान, 4. रस परित्याग, 5. विविक्त शैयासन, 6. कायक्लेश, 7. प्रायश्चित्त, 8. विनय, 9. वैयावृत्य, 10. स्वाध्याय, 11. व्युत्सर्ग, 12. ध्यान।

पंचाचार — 1. दर्शनाचार, 2. ज्ञानाचार, 3. चारित्राचार, 4. वीर्याचार, 5. तपाचार।

षट् आवश्यक — 1. सामायिक, 2. स्तुति, 3. वन्दना, 4. स्वाध्याय, 5. प्रतिक्रमण, 6. कायोत्सर्ग।

तीन गुप्ति — 1. मनोगुप्ति, 2. वचनगुप्ति, 3. कायगुप्ति।

3. उपाध्यायों के 25 गुण —

ग्यारह अंग और 14 पूर्व।

4. मुनियों के 108 गुण —अट्ठाईस मूलगुण, बाईस परिषहजय, बारह तप, बारह भावना, दस धर्म, तेरह प्रकार का चारित्र, छह काय की रक्षा और पंचाचार।

5. मुनि के 28 मूलगुण —

पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रियों पर विजय, षट् आवश्यक कार्य और सात शेष गुण।

6. क्षुल्लक, ऐलक व आर्यिका के 105 गुण —

आठ मूलगुण, बारह व्रत, बारह तप, बारह भावना, ग्यारह प्रतिमा, सप्त व्यसन का त्याग, छह काय जीवों की रक्षा, छह आवश्यक, पाँच समिति, तीन गुप्ति, 22 अभक्ष्य का त्याग, एक बार भोजन करना। **क्रमशः**

प्रथमानुयोग

कवि परिचय

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी राजस्थान प्रान्त के 'जैनिओं की काशी' रूप में सुप्रसिद्ध जयपुर नगर के सुप्रतिष्ठित विद्वानों में अग्रगण्य हैं। आपका अधिकांश जीवन राजस्थान की राजधानी जयपुर में ही व्यतीत हुआ था; तथापि आजीविका के लिए आपको प्रारम्भिक कुछ समय सिंघाणा में व्यतीत करना पड़ा। वहाँ आप दिल्ली के एक साहूकार के यहाँ कार्य करते थे।

सरस्वती माँ के वरदपुत्र रूप आपका काल अठारहवीं शती माना जाता है। आपने लगभग विक्रम संवत् 1776-77 से लेकर विक्रम संवत् 1823-24 पर्यन्त इस भारतभूमि को अपनी विद्यमानता से समलंकृत किया। खण्डेलवाल जाति स्थित गोदिका गोत्र के नररत्न के रूप में आपने पिता जोगीदास तथा माता रम्भादेवी की कूख को पवित्र किया। आपके हरिश्चन्द्र और गुमानीराम नामक दो पुत्र हुए।

आपका जीवनकाल भारत का संक्रान्तिकालीन युग का काल है। उस समय राजनीति में अस्थिरता, सम्प्रदायों में तनाव, साहित्य में शृंगार, धर्म के क्षेत्र में रूढ़िवाद, आर्थिक जीवन में विषमता, सामाजिक जीवन में आडम्बर —ये सभी अपने चरमोत्कर्ष पर थे। इन सभी से पण्डितजी को संघर्ष करना था; ऐसा उन्होंने डटकर किया; प्राणों की बाजी लगाकर भी किया।

पण्डित टोडरमलजी गम्भीर प्रकृति के आध्यात्मिकपुरुष हैं। आप स्वभाव से सरल, संसार से उदास, धुन के धनी, निरभिमानी, विवेकी, अध्ययनशील, प्रतिभासम्पन्न, बाह्याडम्बर-विरोधी, दृढ़-श्रद्धानी, क्रान्तिकारी, सिद्धान्तों की कीमत पर कभी भी नहीं झुकनेवाले, आत्मानुभवी, लोकप्रिय प्रवचनकार, सिद्धान्त ग्रन्थों के सफल टीकाकार, परोपकारी, प्रामाणिक महामानव हैं।

आपने अपने जीवन में छोटी-बड़ी बारह रचनाएं रची हैं; जो लगभग एक लाख श्लोक प्रमाण तथा पाँच हजार पृष्ठों के आसपास हैं। उनमें से कुछ मौलिक और कुछ भाषा टीकाएँ हैं। मौलिक रचनाओं में मोक्षमार्ग-प्रकाशक, रहस्यपूर्ण चिट्ठी, गोम्मटसार-पूजन और समवसरण-रचना-वर्णन—ये चार सर्वमान्य कृतियाँ हैं। टीका-रचनाओं में पुरुषार्थसिद्ध्युपाय भाषा-टीका, आत्मानुशासन भाषा-टीका, त्रिलोकसार जीवकाण्ड भाषा-टीका, गोम्मटसार कर्मकाण्ड भाषा-टीका, अर्थसंदृष्टि अधिकार, लब्धिसार भाषा-टीका और क्षपणासार भाषा-टीका का संग्रह है।

आपके द्वारा रचित मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ अध्यात्मगर्भित आगमशैली की अनुपम रचना है। अनादिकालीन प्रचलित मिथ्या मान्यताओं को जड़मूल से नष्ट कर सम्यक् मोक्षमार्ग का दिशा-निर्देश करने में पूर्ण सक्षम है। यद्यपि यह रचना अपूर्ण है; तथापि आत्महित की दृष्टि से अपूर्व है। शायद इस कृति के कारण ही आपको आचार्यकल्प की उपाधि से विभूषित किया गया है।

आपका सम्पूर्ण जीवन प्राणीमात्र को धर्मानुरागमय अन्तस्प्रेरणा का प्रतीक है। आपकी अल्पकालिक जीवन में की गई गंम्भीरता साहित्यिक साधना/कृतियों से प्राणीमात्र सदैव उपकृत रहेगा।

अक्टूबर 2023 माह के मुख्य जैन तिथि-पर्व

1 अक्टूबर - आश्विन कृष्ण 2-3
श्री नमिनाथ गर्भ कल्याणक

6-7 अक्टूबर - आश्विन कृष्ण 8
अष्टमी

13 अक्टूबर - आश्विन कृष्ण 14
चतुर्दशी

15 अक्टूबर - आश्विन शुक्ल 1
नेमिनाथ ज्ञान कल्याणक

22 अक्टूबर - आश्विन शुक्ल 8
अष्टमी
शीतलनाथ मोक्ष कल्याणक

27 अक्टूबर - आश्विन शुक्ल 14
चतुर्दशी

29 अक्टूबर - कार्तिक कृष्ण 1
अनंतनाथ गर्भ कल्याणक

बालवाटिका

चाण्डाल कौन ?

एक पण्डितजी कथा वाँच रहे थे। कथा में प्रसंग चल रहा था कि क्रोध चाण्डालरूप है। वहाँ किनारे बैठी एक मेहतरानी भी कथा सुन रही थी। दूसरे दिन प्रातःकाल जब पण्डितजी गंगा–स्नान के लिए जा रहे थे तो रास्ते में वही मेहतरानी सड़क बुहार रही थी। पण्डितजी ने पुकारा 'रूक जा।' वह अपनी धुन में मस्त थी, सुना नहीं।

तब पण्डितजी कड़क कर बोले– सुनती नहीं? नीच! मेहतरानी ने कहा– 'महाराज! जरा बचकर निकल जाइये। मैं हर आदमी के लिए रूकती रहूँ तो दिन भर में भी मेरा काम पूरा न हो। उसके जवाब ने पण्डितजी की क्रोधाग्नि में घी का काम किया। वे आपे से बाहर हो गये। जवाब में ऊल–जुलुल बकने लगे। हाथ में जो सोटा था, उससे मेहतरानी को मारने दौड़े। मेहतरानी जरा तेज तबीयत की औरत थी। उसने झाड़ू किनारे रख दी और लगी पकड़कर खींचने। अब तो पण्डितजी की सिट्टी–पिट्टी गुम हो गयी। आने–जाने वालों का मेला लग गया। पण्डितजी लोगों को देख–देख कर गड़े जाते थे।

लोगों ने पण्डितजी से पूछा– 'क्या हुआ महाराज? पण्डितजी के मुँह से कुछ नहीं निकलता था। मेहतरानी से पूछा–क्या हुआ री! तू पण्डितजी का हाथ पकड़कर क्यों खींच रही है? उसने कहा ये मेरे पति हैं। किसी ने पूछा–अरे! ये तेरे पति कैसे हुए? मेहतरानी बोली– कल इन्होंने कथा में कहा था–''क्रोध चाण्डाल है और आज मेरा बुहारना न रोकने पर इन्हें क्रोध आ गया और ये मुझे मारने दौड़े। जब इन्हें क्रोध आ ही गया तो ये मेरे पति (चाण्डाल) हो गये न? अब इन्हें मैं अपने घर ले जा रही हूँ कि चलो महाराज! अब तो आप चाण्डाल हो ही गये न।

शिक्षा– दूसरों को उपदेश देना सरल है, परन्तु उस उपदेश को जीवन में स्वयं उतारना कठिन है। शिक्षा या सीख पहले स्वयं सीखने और जीवन में उतारने के लिए होती है। अतः पहले स्वयं प्रयोग करना चाहिए।

"जिस प्रकार–उसी प्रकार" में छिपा रहस्य

जिस प्रकार– पूर्णमासी का चन्द्रमा, समुद्र उछालता है अर्थात् जब सम्पूर्ण कलाओं सहित चन्द्रमा आसमान में प्रकाशमान होता है, तब समुद्र अपनी चंचल लहरों से उछलने लगता है।

उसी प्रकार– चैतन्यस्वरूप भगवान आत्मा में भरे हुए शान्तरस रूपी समुद्र को उछलने के लिए अर्थात् पर्याय में प्रकट करने के लिए श्री मज्जिनेन्द्र परमात्मा सम्पूर्ण कलाओं सहित उदित चन्द्रमा के समान है।

जिस प्रकार– किसी ने इष्ट स्थान जाने का सच्चा मार्ग जान लिया हो परन्तु चलने में थोड़ी देर लगती हो तो भी वह मार्ग में ही है।

उसी प्रकार– धर्मी जीव ने वीतरागता का मार्ग देखा है, राग रहित स्वभाव को जाना है परन्तु सर्वथा राग दूर करने में थोड़ा समय लगता है तो वह मोक्ष के मार्ग में ही है।

जिस प्रकार– बादाम की गिरी निकल जाने के बाद छिलके को फेंक दिया जाता है।

उसी प्रकार– आत्मा के निकल जाने पर शरीर को फेंक दिया जाता है अथवा जला दिया जाता है अथवा जमीन में गाड़ दिया जाता है। ऐसे शरीर के लिए के भाई तू पाप क्यों करता है ?

जिस प्रकार– भगवान के बिना मन्दिर शोभा नहीं पाता है।

उसी प्रकार– भावलिंग के बिना द्रव्यलिंग की प्रतिष्ठा नहीं हो पाती।

जिस प्रकार– कोई किसी के निमित्त से निर्धन से धनवान हुआ हो तो वह छिपा नहीं रहता अर्थात् बाहर में प्रसिद्ध हुए बिना नहीं रहता।

उसी प्रकार– जिनके निमित्त से स्वयं को सच्चा भान हुआ है उनका विनय, सत्कार, बहुमान आदि किये बिना नहीं रहता। उनके उपकार का लोप नहीं करता और कृतघ्नी नहीं होता।

जिस प्रकार– ताश के पत्तों में इक्का सबसे बड़ा होता है।

उसी प्रकार– सर्व तत्त्वों में त्रिकाली ज्ञायक तत्त्व सबसे बड़ा महान है।

जिस प्रकार– नौ का अंक अफर है, वह कभी अपना नौपना नहीं छोड़ता है।

उसी प्रकार– आत्मा भी अफर है वह कहीं भी रहे अपने ज्ञायक स्वभाव को नहीं छोड़ता है।

क्रमशः **संकलन – प्रो० पुरुषोत्तमकुमार जैन, रुड़की**

समाचार-दर्शन

मोक्षकल्याणक सानन्द सम्पन्न

तीर्थधाम मङ्गलायतन : यहाँ स्थित महावीर जिनालय में श्रावण शुक्ल मोक्ष सप्तमी के दिन भगवान पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक पूजन-भक्ति के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर पण्डित जे.पी. दोशी के मोक्षकल्याणक पर विशेष स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ।

वात्सल्य पर्व सानन्द सम्पन्न

तीर्थधाम मङ्गलायतन : यहाँ स्थित बाहुबली जिनालय में प्रात: काल प्रभात फेरी के साथ प्रक्षाल-पूजन का हर्षोल्लास के साथ आयोजन किया गया। पूज्य गुरुदेवश्री के रक्षाबन्धन पर्व पर विशेष प्रवचन का लाभ और पण्डित जे.पी.दोशी मुम्बई व डॉ. योगेशचन्द जैन, अलीगंज ने जैन पुराणों के आधार से रक्षाबन्धन का हार्द और आयी विसंगतियों पर अपना उद्बोधन दिया। इसी अवसर पर तीर्थधाम मङ्गलायतन की परम्परा अनुसार सभी मङ्गलार्थियों व उनके अभिभावकों ने, परिवारीजनों व कार्यकर्ताओं ने आपस में रक्षासूत्र बाँधा।

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना अनवरत प्रवाहित
बारहवीं पुस्तक की वाचना 24 अगस्त 2023 से प्रारम्भ

विद्वत् समागम - आदरणीय बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर एवं सहयोगी भाई-बहिनों तथा मङ्गलायतन परिवार का भी लाभ प्राप्त होता है।

दोपहर 01.30 से 03.15 तक (प्रतिदिन)		**षट्खण्डागम (धवलाजी)**
रात्रि	07.30 से 08.30 बजे तक	मूलाचार ग्रन्थ का स्वाध्याय
	08.30 से 09.15 बजे तक	**समयसार ग्रन्थाधिराज के कलशों का व्याकरण के नियमानुसार शुद्ध उच्चारण सहित सामान्यार्थ**

नोट—इस कार्यक्रम में आप ZOOM ID-9121984198,
Password - tm@4321
youtube channel - theerthdham mangalayatan
के माध्यम से भी शामिल हो सकते हैं।

दशलक्षण पर्व पर मङ्गलायतन में विशेष कार्यक्रम

तीर्थधाम मङ्गलायतन : यहाँ दशलक्षण पर्व 19 सितम्बर से 28 सितम्बर 2023 के अवसर पर बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबहिन और **सोलापुर** से **पण्डित विक्रान्त शाह,** पण्डित समकित शास्त्री द्वारा स्वाध्याय आदि गतिविधियों का लाभ प्राप्त होगा। तीर्थधाम मङ्गलायतन से दशलक्षण महापर्व के अवसर धर्मप्रभावनार्थ पण्डित अशोक लुहाड़िया, उत्तरप्रदेश के सभी स्थानों में; पण्डित सुधीर शास्त्री दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में; डॉ. सचिन्द्र जैन, मध्यप्रदेश के सभी स्थानों; मङ्गलार्थी अनुभव जैन, मौ; अनुभव जैन, करेली-मुम्बई; शान्तनु जैन, ग्वालियर-नोएडा; शुद्धात्म जैन, भीलवाडा-दिल्ली; हिमालय जैन, सेमारी-शहडोल; अनुभव जैन जबलपुर-अहमदाबाद; सुलभ जैन, मुम्बई; एकत्व जैन, खनियांधाना-पंघाना; प्रतीक जैन, सेमारी-गौरझामर; अभिषेक जैन, उभेगाँव-आरोन; अंकित जैन, आरोन-सनावद में तत्त्वप्रभावना के साथ-साथ तीर्थधाम चिदायतन के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहेंगे।

कार्यक्रम

प्रात:	06.45 से 08.30 बजे	प्रक्षाल-पूजन एवं दशलक्षण विधान
	09.10 से 09.45 बजे	पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	09.50 से 10.35 बजे	स्वाध्याय (पण्डित विक्रान्त शास्त्री, सोलापुर)
दोपहर	01.30 से 03.15 बजे	षटखण्डागमजी धवलाटीकासहित वाचना (ब्र. कल्पनाबेनजी)
	03.20 से 03.40 बजे	आध्यात्मिक पाठ
	03.45 से 04.30 बजे	स्वाध्याय (पण्डित विक्रान्त शास्त्री, सोलापुर)
सायं	06.00 से 06.30 बजे	छात्र स्वाध्याय
	06.35 से 07.15 बजे	जिनेन्द्र भक्ति एवं प्रतिक्रमण
रात्रि	07.35 से 08.30 बजे	स्वाध्याय दशलक्षण पर्व (ब्र. कल्पनाबेनजी)
	08.40 से 09.30 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम

तीर्थधाम मङ्गलायतन में बाहर से पधारनेवाले सभी साधर्मियों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था समुचित रहेगी।

सम्पर्कसूत्र - श्री अशोक बजाज, 9319811708, 7895761327

वैराग्य समाचार

जयपुर : श्री महेन्द्रकुमार पाटनी का देह परिवर्तन शान्तपरिणामपूर्वक हो गया है। आप देश की लगभग 40 संस्थाओं से जुड़े हुए थे। आप दिगम्बर जैन समाज और मुमुक्षु समाज के बीच सेतु बनकर कार्य करते थे। आप जैन समाज को समर्पित सक्रिय कार्यकर्ता थे।

टोकर : पण्डित ब्रजलालजी सालिया का समाधिपूर्वक देह परिवर्तन हो गया है। आप देव-गुरु-शास्त्र को समर्पित विद्वान थे। आपको तत्त्व के प्रति प्रेम था।

रांझी, जबलपुर : श्री अरविन्दकुमार जैन का आकस्मिक देहविलय हो गया है। आप पण्डित अभयकुमार जैन, देवलाली के छोटे भाई थे। आप पूज्य गुरुदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान से ओतप्रोत थे, आप सरल व्यक्तित्व थे। तीर्थधाम मङ्गलायतन से आपको विशेष लगाव था।

दिल्ली : श्रीमती शान्ति देवी का देह परिवर्तन शान्तपरिणामपूर्वक हो गया है। आप पण्डित कैलाशचन्द्र जैन की सुपुत्री और श्री पवन जैन की बड़ी बहिन थीं। प्रारम्भ से ही धार्मिक रुचिवन्त महिला थीं। तीर्थधाम मंगलायतन के प्रति अपार स्नेह था।

रहली : श्री ऋषभकुमार जैन का देह परिवर्तन शान्तपरिणामपूर्वक हो गया है। आप पण्डित अजितकुमार जैन के अग्रज भ्राता थे और डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ के पिताजी थे। आप स्वाध्यायी और समर्पित तत्त्वाभ्यासी जीव थे।

तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार दिवंगत आत्माओं के सुगतिगमन, बोधिलाभ एवं शीघ्र मुक्ति प्राप्ति की भावना भाता है।

अत्यन्त प्रसन्नता का प्रसंग है कि दशलक्षण धर्म के पश्चात् तीर्थधाम मङ्गलायतन में बालब्रह्मचारी सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के पधारने की स्वीकृति 30 सितम्बर 2023 से प्राप्त हुई है। अत: जो भी साधर्मी भाई-बहिन पधारकर धर्मलाभ लेना चाहते हैं। वे सभी साधर्मी सादर आमन्त्रित हैं। उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था समुचित रहेगी।

सम्पर्कसूत्र - श्री अशोक बजाज, 9319811708, 9756633800

तीर्थधाम मङ्गलायतन से प्रकाशित एवं उपलब्ध साहित्य सूची

मूल ग्रन्थ–

1. समयसार वचनिका
2. प्रवचनसार (हिन्दी, अंग्रेजी)
3. नियमसार
4. इष्टोपदेश
5. समाधितंत्र
6. छहढाला (हिन्दी, अंग्रेजी सचित्र)
7. मोक्षमार्ग प्रकाशक
8. समयसार कलश
9. अध्यात्म पंच संग्रह
10. परम अध्यात्म तरंगिणी
11. तत्त्वज्ञान तरंगिणी
12. हरिवंशपुराण वचनिका
13. सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन

1. प्रवचनरत्न चिन्तामणि
2. मोक्षमार्गप्रकाशक प्रवचन
3. प्रवचन नवनीत
4. वृहद्द्रव्य संग्रह प्रवचन
5. आत्मसिद्धि पर प्रवचन
6. प्रवचनसुधा
7. समयसार नाटक पर प्रवचन
8. अष्टपाहुड़ प्रवचन
9. विषापहार प्रवचन
10. भक्तामर रहस्य
11. आतम के हित पंथ लाग!
12. स्वतंत्रता की घोषणा
13. पंचकल्याणक प्रवचन
14 मंगल महोत्सव प्रवचन
15. कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रवचन
16. छहढ़ाला प्रवचन
17. पंचकल्याणक क्या, क्यों, कैसे?
18. देखो जी आदीश्वरस्वामी
19. भेदविज्ञानसार
20. दीपावली प्रवचन
21. समयसार सिद्धि
22. आध्यात्मिक सोपान
23. अमृत प्रवचन
24. स्वानुभूति दर्शन
25. साध्य सिद्धि का अचलित मार्ग
26. दशधर्म प्रवचन
27. वह घड़ी कब आयेगी
28. अहो भाव!

पण्डित कैलाशचन्द्रजी का साहित्य

1. जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला (भाग 1 से 7) (हिन्दी गुजराती)
2. मंगल समर्पण
3. मंगल पत्रांजलि
4. मंगल संबोधन
5. मंगल दैनन्दिनी
6. मंगल देशना

अन्य

1. फोटो फ्रेम (पूज्य गुरुदेवश्री, बहिनश्री)

2. सी.डी.

3. मंगल भक्ति सुमन
4. मंगल उपासना
5. करणानुयोग प्रवेशिका
6. धन्य मुनिदशा
7. धन्य मुनिराज हमारे हैं!
8. प्रवचनसार अनुशीलन
9. पंडित टोडरमल
10. वस्तुविज्ञानसार
11. अध्यात्मत्रिपाठ संग्रह

बाल साहित्य (कॉमिक्स)

1. कामदेव प्रद्युम्न
2. बलिदान
3. मंगल प्रज्ञा (भाग 1, 2, 3)
4. मंगल शासन (भाग 1, 2)
5. मंगल प्रभावना (भाग 1, 2)

सम्पर्क –

सम्पर्कसूत्र–पण्डित सुधीर शास्त्री, 9756633800; पण्डित अभिषेक शास्त्री, 7610009487

Email : info@mangalayatan.com

श्रीमान सद्धर्मानुरागी बन्धुवर,

सादर जयजिनेन्द्र एवं शुद्धात्म सत्कार!

आशा है आराधना-प्रभावनापूर्वक आप सकुशल होंगे।

वीतरागी जिनशासन के गौरवमयी परम्परा के सूत्रधार पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग में निर्मित आपका अपना **तीर्थधाम मङ्गलायतन** बीस वर्षों से, सुचारुरूप से, अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर गतिमान है।

वर्तमान काल की स्थिति को देखते हुए, अब **मङ्गलायतन** का जीर्णोद्धार एवं अनेक प्रभावना के कार्य, जैसे-भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन, भोजनशाला, **मङ्गलायतन** पत्रिका प्रकाशन आदि कार्यों को सुचारू रूप से भी व्यवस्था एवं गति प्रदान करना है। यह कार्य आपके सहयोग के बिना, सम्भव नहीं हैं। इसके लिए हमने एक योजना बनायी है, जिसमें आपको एक छोटी राशि प्रतिमाह दानस्वरूप प्रदान करनी होगी। इस योजना का नाम - **'मङ्गल वात्सल्य-निधि'** रखा गया है। हम आपको इस महत्त्वपूर्ण योजना में सम्मानित सदस्य के रूप में शामिल करना चाहते है। **'मङ्गल वात्सल्य-निधि'** में आपको प्रतिमाह, कम से कम मात्र एक हजार रुपये दानस्वरूप देने हैं।

इस योजना के माध्यम से आप हमें प्रतिमाह 1,000 (प्रतिवर्ष 1000X12=12,000) रुपये दानस्वरूप देंगे। भारत सरकार ने **मङ्गलायतन** को किसी भी रूप में दी जानेवाली प्रत्येक दानराशि पर, आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्रदान की है। आप इस महान कार्य में सहभागिता देकर, स्व-पर का उपकार करें।

आप इसमें स्वयं एवं अपने परिवारीजन, इष्टमित्र आदि को भी सदस्य बनने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। साथ ही **तीर्थधाम मङ्गलायतन** द्वारा संचालित होनेवाले कार्यक्रमों में, आपकी सहभागिता, हमें प्राप्त होगी।

आप यथाशीघ्र पधारकर यहाँ विराजित जिनबिम्बों के दर्शन करें एवं वीतरागमयी वातावरण का लाभ लेवें - ऐसी हमारी भावना है।

हार्दिक धन्यवाद एवं जयजिनेन्द्र सहित

अजितप्रसाद जैन	**स्वप्निल जैन**	**सुधीर शास्त्री**
अध्यक्ष	महामन्त्री	निदेशक

मङ्गल वात्सल्य-निधि

सदस्यता फार्म

नाम ....

पता ....

.... पिन कोड ....

मोबाइल .... ई-मेल ....

मैं **'मङ्गल वात्सल्य-निधि'** योजना की सदस्यता स्वीकार करता हूँ और मैं .... राशि जमा करवाऊँगा / दूँगा।

हस्ताक्षर

''चौथाई ग्रास दान भी अनुकरणीय''

ग्रासस्तदर्धमपि देयमथार्धमेव,
तस्यापि सन्ततमणुव्रतिना यथर्द्धिः।
इच्छानुसाररूपमिह कस्य कदात्र लोके,
द्रव्यं भविष्यति सदुत्तमदानहेतुः॥

अर्थात् गृहस्थियों को अपने धन के अनुसार एक ग्रास अथवा आधा ग्रास अथवा चौथाई ग्रास अवश्य ही दान देना चाहिए। तात्पर्य यह है कि हमें ऐसा नहीं समझना चाहिए कि जब मैं लखपति या करोड़पति हो जाऊँगा, तब दान दूँगा; बल्कि जितना धन हमारे पास है, उसी के अनुसार थोड़ा-बहुत दान अवश्य देना चाहिए।

– आचार्य पद्मनन्दि : पद्मनन्दि पञ्चविंशतिका, श्लोक 230

यह राशि आप निम्न प्रकार से हमें भेज सकते हैं –

1. बैंक द्वारा

NAME	:	SHRI ADINATH KUNDKUND KAHAN DIGAMBER JAIN TRUST, ALIGARH
BANK NAME	:	PUNJAB NATIONAL BANK
BRANCH	:	RAILWAY ROAD, ALIGARH
A/C. NO.	:	1825000100065332
RTGS/NEFTS IFS CODE	:	PUNB0001000
PAN NO.	:	AABTA0995P

UPI

BHIM UPI Payments Accepted at

SHRI ADINATH KUND KUND KAHAN DIGAMBER JAIN TRUST

Account Number : 1825000100065332, IFSC Code: PUNB0001000

2. Online : http://www.mangalayatan.com/online-donation/

3. ECS : Auto Debit Form के माध्यम से।

मांगलिक कार्यक्रम

बुधवार, 15 नवम्बर 2023

प्रातः	7.30 से	जिनेन्द्र पूजन एवं विधान, झण्डारोहण; **स्वाध्याय भवन शिलान्यास**
		पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, विद्वान द्वारा स्वाध्याय
दोपहर	2.30 से	आध्यात्मिक पाठ एवं गोष्ठी
सायं	6.30 से	जिनेन्द्र भक्ति, विद्वान द्वारा स्वाध्याय, सांस्कृतिक कार्यक्रम

गुरुवार, 16 नवम्बर 2023

प्रातः	7.00 से	जिनेन्द्र पूजन, पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन,
	11.00 से	**वेदी शिलान्यास सभा, वेदी शिलान्यास कार्यक्रम**
दोपहर	3.00 से	पुरस्कार वितरण - विज्ञान वाटिका
सायं	6.30 से	जिनेन्द्र भक्ति, विद्वान द्वारा स्वाध्याय

ध्वजारोहणकर्ता: श्री संजय दीवान परिवार, सूरत
विधान आयोजनकर्ता: श्रीमती रजनी जैन, धर्मपत्नी स्व. श्री मुकेश जैन, मेरठ
- पुत्र चिराग जैन परिवार, बैंगलोर

आलोकित ज्ञानदीप

प्रतिष्ठाचार्य - बाल ब्र. अभिनन्दनकुमार जैन, खनियाधाना - बाल ब्र. हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़; **निदेशक** - पण्डित रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर; **मंच सञ्चालन** - पण्डित संजय शास्त्री, जेवर।

ज्योतिर्विद प्रकाशदादा, मैनपुरी; पण्डित श्री विमलदादा झांझरी, उज्जैन; डॉ. राकेश जैन, नागपुर; पण्डित देवेन्द्र जैन, बिजौलिया; पण्डित श्री प्रदीप झांझरी, उज्जैन; पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; पण्डित शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; पण्डित जे. पी. दोशी, मुम्बई; पण्डित राकेश शास्त्री, लोनी, दिल्ली; डॉ. योगेश जैन, अलीगंज; डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली; डॉ. मनीष जैन 'शास्त्री', मेरठ; पण्डित आलोक शास्त्री, कारंजा; पण्डित श्री अरहंत झांझरी, उज्जैन; बाल ब्र. नन्हे भैया, सागर; डॉ. विवेक जैन, छिन्दवाड़ा; पण्डित ऋषभ शास्त्री, छिन्दवाड़ा; पण्डित रमेश जैन, सनावद; पण्डित संदीप जैन, दिल्ली; पण्डित ऋषभ शास्त्री, उस्मानपुर, दिल्ली; पण्डित संजीव जैन, उस्मानपुर, दिल्ली; पण्डित अशोक लुहाडिया, पण्डित सुधीर शास्त्री, डॉ. सचिन्द्र शास्त्री; पण्डित समकित शास्त्री, तीर्थधाम मङ्गलायतन।

ट्रस्टी मण्डल

श्री अजितप्रसाद जैन, दिल्ली; श्री अजित जैन, बड़ोदरा; श्री जे. के. जैन, शामली; श्री मुकेश जैन, अलीगढ़; श्री स्वप्निल जैन, अलीगढ़; श्री अनिल जैन, बुलन्दशहर; श्रीमती बीना जैन, देहरादून; श्री आई. एस. जैन, मुम्बई; श्रीमती रजनी जैन, मेरठ

इस अवसर पर आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

मङ्गल आमंत्रण

सद्धर्मानुरागी बन्धुवर, सादर जयजिनेन्द्र एवं शुद्धात्म सत्कार!

आपको जानकर हर्ष होगा, वीर जिनेन्द्र के शासन में, कुन्दकुन्दादि दिगम्बर आचार्यों की अनुकम्पा से और पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग से तीर्थधाम मङ्गलायतन आप सभी के सहयोग से जिनशासन की आराधना-प्रभावना का महत् कार्य कर रहा है।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी शासन नायक भगवान श्री महावीरस्वामी के निर्वाण कल्याणक प्रसंग पर तीर्थधाम मङ्गलायतन के सुरम्य वातावरण में **आध्यात्मिक शिक्षण शिविर** एवं **वेदी शिलान्यास चिदोत्सव** का आयोजन **शनिवार, 11 नवम्बर से मंगलवार, 14 नवम्बर 2023** एवं **बुधवार, 15 नवम्बर से गुरुवार, 16 नवम्बर 2023** तक किया जा रहा है।

इस शिक्षण शिविर के आयोजन में श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ़ और श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के साथ-साथ इस वर्ष **श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हस्तिनापुर** द्वारा निर्माणाधीन **श्री शान्ति चिदेश जिनालय** का **वेदी शिलान्यास** का विशिष्ट कार्यक्रम भी आप सभी की गरिमामयी उपस्थिति में होने जा रहा है। इस शिक्षण शिविर की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इसमें पूजन विधान, पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन, विद्वानों का स्वाध्याय और गोष्ठियों का लाभ प्राप्त होगा।

ऐसे दुर्लभ अवसर पर लाभ प्राप्त करने हेतु आप सभी को हमारा भावभीना आमन्त्रण है। कृपया अवश्य पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ अर्जित कीजिए।

जैनं जयतु शासनम्।

पं. सं. : DELBIL/2001/4685

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वप्निल जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित। **सम्पादक :** डॉ. जयन्तीलाल जैन,मङ्गलायतन वि०वि०

If undelivered please return to -

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan Digamber Jain Trust

Harinagar, Agra Road, Aligarh-202001 (U.P.)

Ph. : 9997996346, 2410010/10; Fax : 2410019/22

info@mangalayatan.com www.mangalayatan.com